श्रद्धेय डॉ विश्वामित्र जी महाराज के मुखारविन्द से......
बटाला (पंजाब) १२ सितम्बर, २००२ अपराह्न ३.०० बजे

राम मन्त्र तारक भी है, पारक भी है। जो तारे उसे तारक, जो पार ले जाए उसे पारक कहा जाता है। गुरुजनों की कृपा से, आप राम नाम जप रहे है लेकिन यहाँ कोई पार होता हुआ या कोई तैरता हुआ, तैर के पार जाने वाला, दिखाई नहीं दे रहा है। आप इसे जपते रहोगे, लेकिन जब तक आप की बुराइयां दूर नहीं होंगी, ये आपको पार ले जाए, असम्भव है। दूसरों के दोष देखने की बजाय, अपने दोष देखें। पहले अपनी बुराइयों को, अपने दोषों को स्वीकारें फिर परमेश्वर के सामने प्रगाढ़ इच्छा व्यक्त करें तो परमेश्वर आप की रक्षा अवश्य करेगा और आपकी इस बुराई को दूर कर देगा। ख्दृढ़ढ़त्दढ़ ही नहीं करते रहना, आगे भी तो बढ़ना है, मंजिल बहुत दूर है।

हमारा जीवन बिल्कुल ईमानदार जीवन होना चाहिए। सेवा दी हुई है परमेश्वर ने सबको। आप को पत्नी बनाया गया, इनको पुत्र बनाया गया, बाप बनाया गया है, डॉक्टर बनाया गया है, इंजीनियर बनाया गया है। जो कुछ भी परमेश्वर ने बनाया है यह आप को सेवा सौंपी गई है। जो व्यक्ति पद और प्रतिष्ठा के पीछे पड़ जाते हैं, जो साधक प्रशंसा के, यश मान के पीछे पड़ जाते हैं उनको साधक कहते हुए भी लज्जा आती है। पद प्रतिष्ठा की भूख के कारण सेवा की भूख बढनी चाहिए तो हमारा जीवन ईमानदारी का जीवन होता है।

हाल ही में एक साधक परिवार से, पिता का पत्र आया है कि उनका पुत्र, जहां नोटों के लिए, कागज़ आता है उसकी गुणवत्ता की जाँच के लिए, कैमिस्ट पद पर कार्यरत है। साधक है, राम राम जपने वाला है। थोड़ी देर पहले ही नाम दीक्षा ली है। आज विदेश से कागज़ का एक ख्दृद्य आया है। उसने देखा कि कागज़ की क्वालिटी ठीक नहीं है। अधिकारियों को बताया पर उन्होंने उसे झंझट में न पड़ कर कागज़ को पास कर देने को कहा, पर साधक नहीं माना। विदेशी प्रदिनिधि ने, पैसे का प्रलोभन भी दिया। उसने, उनको भी, मना कर दिया। सारी की सारी consignment reject हो गई। घर आने पर, पिता ने कहा, 'बेटा ! बहुत गल्ती कर दी तुमने। अधिकारियों का कहना मानना चाहिए था। आखिर रहना तो उन्हीं के साथ है।' साधक ने कहा,' राम नाम जपने वाला हूँ। राम नाम सिखाता है कि हमारा जीवन absolute honesty का होना चाहिए। यदि हम ही पवित्र नहीं होंगे तो एक सामान्य व्यक्ति का हाल क्या होगा।' लेकिन साधक जब पुनः दफ्तर जाता है तो उसकी मेज पर, उसकी प्रमोशन के Orders पडे हुए हैं। परमेश्वर ऐसे व्यक्ति की सहायता करता है, पूरी रक्षा करता है जो ईमानदारी का जीवन बिताता है।

माताओं ! आपने पुत्रों को व अपने पतियों को, ईमानदार रहने दीजिएगा। मत उनके ऊपर, एक डिमांड के ऊपर दूसरी डिमांड, दूसरी के ऊपर तीसरी डिमांड डालते जाइएगा कि उनको बेईमानी करने पर, विवश होना पड़े। जितना पैसा हमें इस प्रकार से आता है, मुकद्दमे, बीमारी आदि पर ही चला जाता हे। सन्तान आगे इस प्रकार की निकल आती है कि वह आपको, आपके पैसे को भी बर्बाद कर देती है और एक प्रतिष्ठित व्यक्ति के माथे पर कलंक लगाने वाली हो जाती है।

परमेश्वर को प्रसन्न करना चाहते हो तो आप को, आपनी विचारधारा को, बदलना पडेगा। इन्सान को खुश करना अति दुष्कर और परमात्मा को खुश करना बहुत आसान। ईमानदारी का जीवन बिताने से परमेश्वर प्रसन्न होता है।